

कलाकर्म एक विचित्र उन्माद है। इसे विश्वास से सहजना है। सम्पूजिता से, पहाड़ों के धेरों के समान, यौन प्रतीक्षा में, ओढ़ेले ही। जो कुछ साग्र है, प्रत्यक्ष है, पर केवल आरव नहीं देख पाती। रूप से अतिरूप तक, अनेक अपरिचित सम्भावनाएँ हैं जहाँ सत्य छिपा है। निरसदेह बुद्धि, तर्क और व्यवस्थित उन्माद के शिखर पर बसी दिव्य शक्ति - "अन्तर्ज्योति" ही कलाकर्म का सर्वश्रेष्ठ साधन है।

शान्ति और संगीता के "कला अड्डे" के उद्घाटन पर, लोह सं-